भाषाभूषण ।

अलङ्कार का ग्रन्थ ।

जिसे

मरुस्थलाधीश श्रीमन्महाराज

जशवन्तसिंह जी राठौर

ने

भाषाप्रेमियों के निमित संस्कृत का

आशय लेकर निर्माण किया ।

और जिसे

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन

ने निज यंत्रालय में प्रकाश किया ।

काशी ।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुआ ।

सन १८९४ ई० ।

प्रथम बार १०००]   [मूल्य ?)

श्रीराधावल्लभो जयति ।

भाषाभूषण ।

दोहा ।

बिघनहरन तुम हौ सदा गनपति होउ सहाय ।
बिनती कर जोरैं करौं दीजे ग्रन्थ बनाय ॥ १ ॥
जिहि कीनो परपंच सब अपनी इच्छा आय ।
ताकौं हौं बन्दन करौं हाथ जोरि सिर नाय ॥
करुणा करि पोषत सदा सकल सृष्टि के प्रान ।
ऐसे ईश्वर कौ हिये रहौ रैनि दिन ध्यान ॥३॥
मेरे मन मै तुम रहौ ऐसे क्यौं कहि जाय ।
तातें यह मन आप सौं लीजे क्यौं न लगाय ॥
रागी मेनु मिलि लाल सौं भयौ न गहिरो लाल ।
यह अचरज उज्जल भयौ तज्यौ मैल तिहि काल ॥

चतुर्विध नायक ।

एक नारि सौं हित करै सो अनुकूल बखानि ।
बहु नारिन सौं प्रीति सम ताकौं दच्छिन जानि ॥

मोठी बातैं सठ कहै करिकै महा बिगार ।
आवत लाज न धृष्ट कौं दिये कोटि धिक्कार ॥

त्रिविधि पति ।

स्वकिया पति सौं पति कहैं परकीया उपपत्ति ।
वैसिकनायक की सदा गनिका सौं हित रत्ति ॥

नायिका जाति ।

पद्मिनि चित्रिनि संखिनी अरु हस्तिनी बखानि ।
बिबिधिनायिका भेद मे चारि जाति तिय जानि ॥

नायिका भेद ।

स्वकिया व्याही नायिका परकीया परबाम ।
सो सामान्या नायिका जाकै धन सौं काम ॥

मुग्धा मध्या प्रौढ़ा तीन अवस्था भेद ।

बिन जानै अज्ञात है जानै जोबन ज्ञात ।
मुग्धा के द्वै भेद ये कवि सब बरनत जात ॥११॥
मध्या सो जामै दुहूं लज्जा मदन समान ।
अति प्रबीन प्रौढ़ा उहै जाकै पिय मै प्रान ॥१२॥

परकीया के छ भेद ।

क्रिया बचन मे चातुरी यहै बिदग्धा रीति ।
बहुत दुरायेहु सखी लखी लक्षिता प्रीति ॥१३॥

गुप्ता रति-गोपित करै तृप्ति न कुलटा आहि ।
निश्चै जानै पिय-मिलन मुदिता कहियै ताहि ॥
बिनसै ठौरं सहेट की आगे होय न होय ।
जाइ सकै न सहेट मैं अनुसयना है सोय ॥१५॥

अथ नव विधि नायिका ।

प्रोषितपतिकाविरहिनी अतिरिस पति सों होय।
पुनि पीछे पछिताइ मन कलहन्तरिता सोय ॥
पिय आवै कहुँ रैनि बसि प्रात खण्डिता गेह।
जातिमिलनअभिसारिका सजिसिँगारसबदेह ॥
पिय सहेट आयौ नहीं चिन्ता मन मे आनि ।
सोच करै सन्ताप सौं उत्कंठिता बखानि ॥१८॥
बिन पाये संकेत पिय बिप्रलब्ध तन ताप ।
बासकसज्जा तन सजै पिय-आवन जिय थाप ॥
जाके पति आधीन कहि स्वाधिनपतिका ताहि।
और सुनै पिय को गमन प्रबसितपतिका आहि॥

अथ गर्बिता अन्यसंभोगदुःखिता ।

रूप प्रेम अभिमान ते दुबिध गर्बिता जानि ।
अन्यसंभोग जु दुःखिता अनत मिलन पियमानि॥

धीरादिक ३ भेद।

गोपि कोप धीरा करै प्रगट अधीरा कोप ।
लच्छन धीर अधीर को कोप प्रगट औ गोप ॥

त्रिबिधिमान।

सहजैं हाँसी खेल तें विनय वचन सुनि कान ।
पाय परे पिय के मिटै लघु मध्यम गुरु मान ॥

अथ ८ सात्विक भाव।

स्तम्भ कम्प स्वरभंग कहि विवरन आंसू खेद ।
बहुरि प्रलय रोमाञ्च पुनि आठौ सात्विक भेद ॥

हाव।

होंइ सिंगार सँजोग मे दम्पति के तन आइ ।
चेष्टा जे बहु भांति की ते कहियै दस हाइ ॥
पिय प्यारी रति सुखि करैं लीलाहाव सुजानि।
बोलि सकै नहि लाज तैं विहृत हाव बखानि ॥
चितवनि बोलनि चलनि मै रस की रीति बिलास।
सोहत अँग अँग भूषननि ललित सुहाव प्रकास॥
बिच्छित्त् काह्न बेर मे भूषन अलप सुहाय ।
रस सों भूषन भूलि कै पहिरै बिभ्रम हाय ॥२८॥

क्रोध हर्ष अभिलाष भय किलकिञ्चित मे होय।
प्रगट करै दुख सुख समै हाव कुट्टमित सीय ॥
प्रगट करै रिस पीय सों बात न भावै कान ।
आये आदर ना करै धरि बिब्बोक गुमान ॥३०॥
पिय की बातन मे चलै तिय अँगराइ जँभाय ।
मोटाइत सो जानियै कहैं महा कविराय॥३१॥

बिरह की दश दसा ।

नैन मिलै मनहूं मिल्यौ मिलिबे को अभिलाष।
चिन्ता जात न बिन मिलै जतन कियेहूं लाख॥
सुमिरन रससंयोग कौ करि २ लेति उसास।
करति रहत पिय-गुन-कथन मन उद्वेग उदास॥
बिनु समुझे कछु बकि उठै कहियै ताहिँ प्रलाप।
देह घटति मनमै बढ़ति बिरहव्याधि सन्ताप ॥
तिय-मूरति मूरति भई है जड़ता सब गात ।
सो कहियै उन्माद बस सुधि बिन निसदिनजात ।

नवरस ।

प्रथम सृँगार सुहास्य पुनि करुणा रौद्रहि जानि।
बीर भयरु बीभत्स कहि अद्भुत साँत बखानि ॥

अथ ८ स्थायी भाव ।

रति हाँसी अरु शोक पुनि क्रोध उछाह रु भीति ।
निन्दा विस्मय आठ ये स्थायीभाव प्रतीति ॥

अथ उद्दीपन आलम्बन विभावानुभाव ।

जो रस को दीपति करै उद्दीपनि है सोइ ।
सो अनुभाव जु ऊपजै रस को अनुभव होइ ॥
आलम्बन अवलंबि रस जामै रहै बनाय ।
जोई रस मै संचरै सो विभाव कहलाय ॥३८॥

अथ ३३ संचारी ।

निर्वेद् ग्लानि संका गरब चिन्ता मोह विषाद ।
दैन्य असूयामृत्यु मद आलस श्रम उन्माद ॥
आकृति गोपन चपलता अपसमार भय जानि ।
व्रीड़ा जड़ता हर्ष धृति मति आवेग बखानि ॥
उत्कण्ठा निद्रा स्वपन व्याधि उग्रता भाय ।
अमर्ष विमर्ष वितर्क स्मृति ये तैतीस गनाय ॥

अथ अलङ्कारप्रकरणम् ।

अथ अलङ्कार उपमा ।

उपमेयरु उपमान जहँ बाचक धर्म सुचारि ।
पूरन उपमाहीन तहँ लुप्तोपमा विचारि ॥

इह विधि सब समता मिलै उपमा सोई जानि।
ससि सो उज्जल तियबदन पल्लव से मृदु पानि॥

लुप्तोपमा।

बाचक धर्म रु बर्ननियै है चौथो उपमान।
इक बिन द्वै बिन तीनि बिन लुप्तोपमा प्रमान॥
बिजुरी सी पंकजमुखी कनकलता तिय लेषि।
बनिता रसस्टंगार की कारन मूरति पेषि॥

अनन्वय।

उपमेयी उपमान जब कहत अनन्वय ताहि।
तेरे मुख को जोड़ को तेरोही मुख आहि॥४५॥

उपमानोपमेय।

उपमा लागै परसपर सो उपमाउपमेय।
खञ्जन हैं तव नैन से तव दृग खञ्जन सेय॥४६॥

अथ पंचविधि प्रतीप।

सो प्रतीप उपमेय को कीजै जब उपमान।
लोयन सें अम्बुज बनै मुख सो चन्द्र बखानि॥
उपमे को उपमान तें आदर जबै न होय।
गरब करति मुख को कहा चन्दहि नीके जोइ॥

अनआदर उपमेय ते जब पावै उपमान ।
तोछिन नैन कटाच्छि तैं मन्द काम के बान ॥
उपमे कों उपमान जब समता लायक नाँहि ।
अति उत्तम दृग मीन से कहै कौन विधि जाँहि॥
व्यर्थ होइ उपमान जब वर्णनीय लखि सार ।
दृग आगे मृग कछु न ये पञ्च प्रतीप प्रकार॥५१॥

अथ रूपकालंकार षट् विधि ।

रूपक है द्वै भांति को मिलितद्रूपअभेद ।
अधिक न्यून सम दुहुन के तीनि तीनि ये भेद ॥
मुखससियाससितैंअधिकउदितजोतिदिनराति।
सागर तैं उपजी न यह कमला अपर सुहाति ॥
नैन कमल ए ऐन हैं और कमल विहि काम ।
गमन करति नीको लगति कनकलता यह बाम॥
अति सोभित विद्रुम-अधर नहि समुद्र उत्पन्न ।
तुव मुख पङ्कज बिमल अति सरस सुबास प्रसन्न॥

परिणामालंकार

करै क्रिया उपमान ह्वै वर्णनीय परिणाम ।
लोचन-कञ्ज बिसाल तैं देखति देखो बाम॥५६॥

द्विविधि उल्लेख ।

सो उल्लेख जु एक कों बहु समझैँ बहु रीति ।
अर्थिन सुरतरु तिय मदन अरिकौ काल प्रतीति॥
बहुविधि बरनैं एक कौ बहुगुन सो उल्लेख ।
तू रण अर्जुन तेज रवि सुरगुरु बचन विशेष॥५८॥

स्मरणभ्रमसन्देह ।

सुमिरण भ्रम सन्देह ए लच्छन नाम प्रकास ।
सुधि आवति वा बदन की देखे सुधानिवास ॥
बदन सुधानिधि जानिकै तुव सँग फिरत चकोर।
बदन किधौं यह सीतकर किधौं कमल भये भोर ॥

शुद्धापन्हुति ।

धर्म्म दुरैं आरोप तें शुद्ध अपन्हुति जानि ।
उर पर नाहिँ उरोज यह कनकलता-फल मान॥

हेत्वपन्हुति ।

बस्तु दुरावै जुक्ति सों हेतु अपन्हुति होइ ।
तीव्र चन्द नहि रैनि रवि बड़वानलही जोइ ॥

पर्यस्तापन्हुति ।

पर्यस्त जु गुन और कै और बिषै आरोप ।
होइ सुधाधर नाहि यह बदन सुधाधर ओप ॥

भ्रान्त्यापन्हुति ।

भ्रांति अपन्हुति बचन सों भ्रम जब पर को जाय।
ताप कम्प है ज्वर नहीं ना सखि मदन सताय ॥

छेकापन्हुति ।

छेकापन्हुति उक्ति करि पर सों बात दुराइ ।
करत अधर-क्षत पिय नहीं सखी सीत रितु बाइ ॥

कैतुवापन्हुति ।

कैतुवऽपन्हुति एक को मिसु करि बरनै आन ।
तीक्षन तीय-कटाक्ष मिस बरषत मनमथ बान ॥

उत्प्रेक्षालंकार—त्रिविधि ।

उत्प्रेक्षा सम्भावना बस्तु हेतु फल लेखि ।
नैन मनो अरबिन्द हैं सरस बिलास बिसेषि ॥
मनो चली आँगन कठिन तातें राते पाँय ।
तुव-पद-समता को कमल जल सेवत इक पाइ॥

रूपकातिशयोक्ति ।

अतिशयोक्ति रूपक उहै केवलही उपमान ।
कनकलता पर चन्द्रमा धरैं धनुष है बान ॥६८॥

सापन्हवातिशयोक्ति ।

सापन्हव गुन और के औरहि पर ठहराइ ।
सुधा भरौ यह वदन तुव चन्द कहै बौराइ ॥

भेदकातिशयोक्ति ।

अतिसयोक्ति भेदक वहै इहि विधि बरनत जात ।
औरै हँसिबो देखिबो औरहि याकी बात॥७०॥

सम्बन्धातिशयोक्ति ।

सम्बन्धातिशयोक्ति सो देत अजोगहि जोग ।
या पुर के मन्दर कहैं ससि लों ऊँचे लोग॥७१॥

असम्बन्धातिशयोक्ति ।

अतिशयोक्ति दूजो उहै जोग अजोग बखानि ।
तो कर आगे कलपतरु क्यों पावै सनमान ॥

अक्रमातिशयोक्ति ।

अतिशयोक्ति अक्रम जवै कारज कारन संग ।
तो सर लागत साथही धनुषहिँ अरु अरि-अंग॥

चपलातिशयोक्ति ।

चपलात्युक्ति जु हेत के होत नामहीं काज ।
कङ्कनही भई मूँदरी पीय-गमन सुनि आज ॥

अत्यन्तातिशयोक्ति ।

अत्यन्तातिशयोक्ति सो पुरबापर क्रम नाहि ।
बान न पहुँचै अंगलों अरि पहिले गिरि जाँहि॥

तुल्ययोगिता ।

तुल्ययोगिता तीनि बिधि लच्चण क्रम तें जानि ।
एक शब्द में हित अहित बहु में एकहि बानि॥
बहु में समता गुननि करि इहि बिधि भिन्न प्रकार।
गुननिधि नीकै देख तू तिय की उर को हार ॥
नवलबधू की बदनदुति अरु सकुचत अरबिन्द ।
तुही सिरीनिधि धर्म्मनिधि तुही चन्द अरबिन्द॥

दीपक ।

सो दीपक निज गुननि सों बर्न्यं इतर इक भाइ।
गज मद सों नृप तेज सों सोभा लहत बनाइ ॥

दीपकावृत्ति ।

दीपक आवृति तीनि बिधि आवृति पद की होइ।
पुनि है आवृति अर्थ की दूजै कहियै सोइ ॥
पद अरु अर्थ दुहूनि की आवृति तीजै लेखि ।
घन बरषै है री सखी निसि बरषै है देखि ॥

फूलि वृक्ष कदम्ब के कैतक विकसै आइ ।
मत्त भये हैं मोर अरु चातक मत्त सराहि ॥८२॥

प्रतिवस्तूपमा ।

प्रतिवस्तूपम समझिये दोऊ वाक्य समान ।
सोभा सूर प्रतापबर सोभा सूरहि बानि. ॥८३॥

दृष्टान्तालङ्कार ।

अलङ्कार दृष्टान्त सो लच्छन नाम प्रमान ।
कान्तिमान शशिहीं बन्यो तूहीं कीरतिमान ॥

निदर्शना ।

कहियै त्रिबिधि निदर्शना वाक्य अर्थ सम दोइ।
एक क्रिया पुनि और गुन और वस्तु मे होइ ॥
कहियै कारज देखि कछु भलौ बुरौ फल भाव।
दाता सोम सुअंक-बिन पूरनचन्द बनाव ॥८६॥
देखौ सहजै धरत ए खंजनलीला मैन ।
तेजस्वी सों निबल बल महादेव अरु मैन ॥८७॥

व्यतिरेक ।

व्यतिरेक जु उपमान ते उपमे अधिकौ देखि।
मुख है अम्बुज सों सखी मीठी बात विशेष ॥

सहोक्ति ।

सो सहोक्ति सब साथही बरनै रस सरसाइ ।
कीरति अरिकुल संगही जलनिधि पहुँची जाइ॥

विनोक्ति ।

है विनोक्ति द्वै भांति की प्रस्तुत कछु बिन छीन।
अरु सोभा अधिकी लहै प्रस्तुत कछु इक हीन॥
दृग खंजन से कंज से अंजन बिन सोभै न ।
बाला सब गुन सरस तनु रंच रुखाई है न ॥

समासोक्त्यलंकार: ।

समासोक्ति प्रस्तुत फुरैं ऽप्रस्तुत बर्नन मांझ ।
कुमुदिनिहू प्रफुलित भई देख कलानिधि सांझ॥

परिकरालंकार: ।

है परिकर आशय लिये जहां विशेषन होइ ।
शशिवदनी यह नायिका ताप हरति है जोइ ॥

परिकरांकुरालंकार: ।

साभिप्राय विशेष्य जब परिकर-अङ्कुर नाम ।
सूधेहू पियके कहैं नेंक न मानति बाम ॥६४॥

श्लेषालंकारः ।

श्लेष अलंकृति अर्थ बहु एक शब्द में होत ।
होय न पूरन नेह बिन ऐसो बदन उदोत ॥९५॥

अप्रस्तुतप्रशंसालंकारो द्विविधः ।

अलंकार द्वै भांति की अप्रस्तुत प्रशंस ।
इक बर्नन प्रस्तुत विना दूजें प्रस्तुत अंश ॥९६॥
धनि यह चरचा ज्ञान की सकल समैं सुख देत ।
विष राखत हैं कंठ शिव आप धर्यो इहि हेति ॥

प्रस्तुतांकुरालंकारः ।

प्रस्तुत अंकुर हैं किये प्रस्तुत में प्रस्ताय ।
कहां गयो अलि केवरे छांड सुकोमल जाय ॥

पर्यायोक्त्यलंकारो द्विविधः ।

पर्यायोक्ति प्रकार द्वै कछु रचना सों बात ।
मिसु करि कारज साधियैं जो कछु चितहिं सुहात॥
चतुर वहै जिहिं तुव गरे बिन-गुन डारी माल।
तुम दोउ बैठौ यहां जात अन्हावन ताल ॥१००॥

व्याजस्तुत्यलंकारः ।

व्याजस्तुति निन्दा मिसैं जबैं बड़ाई होय ।
स्वर्ग चढ़ाये पतित लै गंग कहा कहुँ तोहिं ॥

व्याजनिन्दालंकारः ।

व्याजनिंद् निंदा मिसैं निंदा औरैं होय ।
सदा छीन कीनो न क्यों चंद मंद है सोय॥१०२॥

आक्षेपालंकारः त्रिधा ।

तीन भांति आक्षेप है एक निषेधाभास ।
पहिलैं कहियैं आप कछु बहुरि फेरियैं तास ॥
दूरैं निषेध जु विधि वचन लच्छन तीनो लेखि ।
हौं नहि दूती अगनि तें तिय तन ताप विशेखि॥
शीतकिरन दे दरश तूं अथवा तियमुख आहि ।
तहां जन्म मोकों दई चले देश तुम जाहि॥१०५॥

विरोधाभासालंकारः ।

भासैं जबैं विरोध सो यहै विरोधाभास ।
उतरत हों उतरत नहीं मनतें प्राननिवास॥१०६॥

विभावनालंकारः षड्विधः ।

होहि छ भांति विभावना कारन बिनहीं काज ।
बिन जावक दीनैं चरन अरुन लखि हैं आज ॥
हेतु अपूरन तें जबैं कारज पूरन होय ।
कुसुंमबान कर गहि मदन सब जग जीत्यो जोय॥

प्रतिबंधक के होतहू कारज पूरन मान ।
निशिदिन श्रुति-संगति तऊ नैंन रागकी खान ॥
जबैं अकारन वस्तु तैं कारज प्रकटहिं होत ।
कोकिल की बानी चवैं बोलत दिख्यो कपोत ॥
काहू कारन तें जबैं कारज होहि विरुद्ध ।
करत मोहि संताप यह सखी शीतकर शुद्ध॥१११
पुनि कछु कारज तें जबैं उपजैं कारन रूप ।
नैनमीन तें देखि यह सरिता बहति अनूप ॥

विशेषोक्त्यलङ्कारः ।

विशेषोक्ति जब हेतुसों कारज उपजैं नाहि ।
नेह घटत नहि हिय जऊँ काम-दीप घट मांहि॥

असंभवालंकार ।

कहैं असंभव होत जब बिन संभावन काज ।
गिरिवर धरिहै गोपसुत को जानै थो आज ॥

असंगत्यलंकार त्रिविधः ।

तीन असंगति काज अरु कारन न्यारे ठाम ।
और ठौरहीं कीजिये और ठौर को काम ॥
और काज आरंभिये औरैं करिये दौर ।
कोकिल मदमातो भई झूमत अम्बा मौर ॥

तेरे अरि की अंगना तिलक लगायो पाय ।
मोह मिटायो नांहि प्रभु मोह लगायो आय ॥

विषमालंकारस्त्रिविधः ।

विषम अलंकृति तीन विधि अनमिलतेको संग ।
कारन को रँग और कछु कारज औरैं रंग ॥
और भलो उद्यम किये होत बुरो फल आय ।
अति कोमल तन तीय को कहां बिरह की लाय ॥
खड्गलता अति श्याम तें उपजी कीरति सेत ।
सखि लायो घनसार पैं अधिक ताप तन देत ॥

समालंकार स्त्रिविधः ।

अलङ्कार सम तीन विधि यथायोग को संग ।
कारज मैं सब पाइये कारनही के अंग ॥१२१॥
श्रम बिन कारजसिद्धि जब उद्यम करतहिं होय ।
हार बास तिय उर धस्यो अपने लायक लोय ॥
नीच संग अचरज नहीं लछमी जलजा आहि ।
जशहीको उद्यम कियो नीकै पायो ताहि ॥

विचित्रालंकार ।

इच्छा फल बिपरीत की कीजै जतन विचित्र ।
नवत उच्चिता लहन को जो हैं पुरुष पवित्र ॥

अधिकालंकार द्विविध ।

अधिकाई आधेय की जब अधार सों होय ।
जो अधार आधेय तें अधिक अधिक ए दोय ॥
सात दीप नौ खण्ड में कीरति नाहिं समात ।
शब्द सिन्धु कितो जहां तुव गुन बरनें जात ॥

अल्पालंकार ।

अल्प अल्प आधेय तें सूक्ष्म होय आधार ।
अँगुरी की मुंदरी हुती भुज में करत बिहार ॥

अन्योन्यालंकार ।

अन्योन्यालंकार है अन्योन्यहिं उपकार ।
शशि सों निशि नीकी लगै निशिही में शशि सार॥

विशेषालंकारस्त्रिविधः ।

तीन प्रकार विशेष है अनाधार आधेय ।
थोरो कछु आरंभ जब अधिक सिद्धिको देय ॥
वस्तु एक को कीजिये बर्नन ठौर अनेक ।
नभ ऊपर कचंनलता कुसुम स्वच्छ है एक ॥
कल्पवृच्छ देख्यो सही ताको देखत नैन ।
अंतर बाहिर दिश विदिश बहै तीय सुखदैन ॥

व्याघातालंकारो द्विविध ।

व्याघात जु कछु और तें कीजै कारज और ।
बहुरि विरोधी तें जबै कारज लहिये ठौर ॥
सुख पावत जासों जगत तासों मारत मार ।
निहचैं जानैत बाल तो करै न मो परिहार ॥

कारणमालालंकार ।

कहिये गुंफ परंपरा कारन माला हीत ।
नीती तें धनत्याग पुनि ताते जस उद्योत ॥

एकावल्यलंकार ।

गहत मुक्त पद रीति जब एकावलि तब मान ।
दृग श्रुति पर श्रुति बाहु पर बाहु जंघ लों जान॥

मालादीपकालंकार ।

दीपक एकावलि मिलैं मालादीपक नाम ।
कामधामतियहियभयो तियहियभोतुवधाम१३६॥

सारालंकार ।

एक एक तें सरस जब अलंकार यह सार ।
मधु सों माधुरि है सुधा कविता मधुर अपार॥

यथासंख्यालंकार।

यथासंख्य बर्नन विषे बस्तु अनुक्रम संग ।
करि अरि मित्त बिपत्ति को गंजन रंजन भंग ॥

द्विपर्यायालंकार।

द्वे पर्याय अनेक को क्रम सो आश्रय एक ।
फिरि क्रमतें जब एकको आश्रय धरैं अनेक॥१३९॥
होति तरलता चरन मैं भई नैन में आय ।
अम्बुज तजि तियबदनदुति चन्दहि रही बनाय॥

परिवृत्यलंकार।

परिवृत्ती लीजै अधिक थोरोई कछु देय ।
भरि इन्दिरा कटाच्छ सों इकसर डारी लेय ॥

परिसख्यालंकार।

परिसंख्या इक थल तजत दूजे थल ठहराय ।
नेह हानि हिय मे नहीं भई दीप मे जाय ॥१४२॥

विकलपालंकार।

है विकल्प यह कै वहै इहि विधि को बरनन्त ।
करिहै दुख को अन्त अब जम कै प्यारो कन्त ॥

समुच्चयालंकार द्विविधः।

होय समुच्चय भाव बहु कहुं इक उपजै संग ।
एक काज चाहैं कियौ ह्वै अनेक इक अंग ॥
तुव अरि भाजत गिरत फिर भाजत हैं सतराय।
जोबन विद्या मदन धन मद उपजावत आय॥

कारकदीपकालंकार।

कारक दीपक एक मे क्रम ते भाव अनेक।
जाति चिते आवत हँसति पूछत पांथ विवेक ॥

समाध्यलंकार।

सो समाधि कारज सुगम और हेतु मिल होत।
उत्कण्ठा तिय को भई अथयो दिन उद्योत ॥

प्रत्ननीकालंकार।

प्रत्यनीक सो प्रवल रिपु ता हित सों करै जोर।
नैन समीपी श्रवन पर कंज चढ्यौ कर जोर ॥

काव्यार्थापत्यलंकार।

कवि कैमुत्तिक न्याय को काव्यार्थापति गात।
मुख जीत्यौ वा चन्द को कहा कमल की बात॥

काव्यलिंगालंकार।

काव्यलिंग जब युक्ति सों अर्थ समर्थन होय।
तोकों मैं जीत्यो मदन मो हिय मे सिव सोय॥

अर्थान्तरन्यासालंकार।

सामान्य ते विशेष दृढ़ तव अर्थान्तरन्यासु।
रघुवर के बल गिरि तरे बड़े करैं न कहासुच॥

विकस्वरालंकार ।

विकस्वर होत विशेष जब फिर सामान्य विशेष।
हरि गिरि धाखौ सत्पुरुष भार सहत ज्यों शेष॥

प्रौढ़ोक्त्यलंकार ।

प्रौढ़ोक्ती उत्कर्ष बिन हेतू बर्नन काम !
केश अमावस रैन घन सघन तिमिर सब श्याम॥

सम्भावनालंकार ।

जो यों है तो यों कहैं सम्भावना बिचार ।
बक्ता हो तो शेष जो कहतो गुनन अपार ॥

मिथ्याध्यवसित्यलंकार ।

मिथ्याध्यवसितिकहतकछु मिथ्याकल्पनरीति ।
कर मै पारद जो रहै करै नबोढ़ा प्रीति॥१५४॥

ललितालंकार।

ललित कह्यौ कछु चाहिये ताही को प्रतिबिम्बु।
सेत बाँधि करिहै कहा अब तो उतखौ अम्बु ॥

प्रहर्षणालंकार।

तीन प्रहर्षन जतन बिन बांछित फल जो होय।
बांछितहू ते अधिक फल श्रम बिन लहिये सोय॥

साधत जाकि जतन कौं बस्तु चढ़ी कर सोइ ।
जाको चित में चाह भइ आई दूती होइ ॥१५७॥
दीपक की उद्यम तहां जौ लगि उद्यो भान ।
निधि अंजन की औषधी शोधत लही निदान ॥

विषादालंकारः ।

सो विषाद चित चाह तें उलटो काछु ह्वै जाय ।
नीवी परसत श्रुति परी चरन शुद्ध धुनि आय ॥

उल्लासालंकारः ।

गुन औगुन जब एककैं और धरैं उल्लास ।
न्हाय संत पावन करैं गङ्ग धरै इहि आस ॥१६०॥

अवज्ञालंकारः ।

होत अवज्ञा और कौं न लगैं गुन ह्वैं दोष ।
परम सुधाकर किरन तें खुले न पंकज कोश ॥

अनुज्ञालंकारः ।

होत अनुज्ञा दोष को जो लीजैं गुन मानि ।
होत विपति यामें सदा हिये चढ़त हरि आन ॥

लेखालंकारः ।

गुन में दोष रु दोष में गुन कल्पन सो लेख ।
शुक यह मधुरी बानि तें बन्धन लह्यो विशेष ॥१६३

मुद्राप्रस्तुत्यलंकार ।

मुद्रा प्रस्तुत पद विषैं औरैं अर्थ प्रकाश ।
अली जाय किन पिय जहां जहां रसीलौ बास ॥

रत्नावल्यलंकार ।

रत्नावलि प्रस्तुत अरथ क्रम तें औरहु नाम ।
रसिकचतुरसुखलच्छिपति सकलग्यानकोधाम ॥

तद्गुणालंकार ।

तद्‌गुन तजि गुन आपनो संगति को गुन लेय ।
बेसरमोती अधर मिल पद्मराग छबि देय॥१६६॥

पूर्वरूपालंकारो द्विधा ।

पूर्व रूप ले संग गुन तजि फिर अपनो लेत ।
दूजे जब गुन ना मिटै किये मेटन के हेत ॥
शेष श्याम है शिव-गरे यश तें उज्जल होत ।
दीप मिटें चिह्न कियो रशना-मनि उद्योत॥१६८

अतद्गुणालंकार ।

अतद्‌गुन सुसंगति भये जब गुन लागत नाहिं ।
पिय अनुरागी ना भयो बसि राग मन माहिं ॥

अनुगुणालंकार ।

अनुगुनै संगति भये तें अपने गुन सरसाय ।
मुक्तमाल प्रियहास तें अधिक सेत ह्वै जाय ॥

मीलितालंकार ।

मिलित सौइ सादृश्य तें भेद जबै न लखाय ।
अरुनबरन तियचरन पर जावक कह्यो न जाय ॥

सामान्यालंकार ।

सामान्य जु सादृश्य तें जान परै न विशेष ।
नाहिंफरकककुकमलअरु तियलोचनअनिमेष ॥

उन्मीलितालंकार ।

उन्मीलित सादृश्य तें भेद फुरैं तब मानि ।
कीरतिढ़ाक्यो तुहिनगिरि छुये परति है जानि॥

विशेषकालंकार ।

वहै विशेष्य विशेष पुनि फुरै जु समता माभि।
तियमुख अरु पंकज लखैं शशिदर्शन तें साभि ॥

गूढोत्तरालंकार ।

गूढोत्तर कछु भाव तें उत्तर दीने होत ।
इत बेतस-तरु में पथिक उतरन लायक श्रोत॥

चित्रालंकार।

चित्र प्रश्न उत्तर दुहू एक बचन में सोय ।
मुग्धा तिय की केलिरुचि भौन कौन में होय ॥

सूक्ष्मालंकार।

सुच्छम पर आशय लखैं सैनन में कछु भाय ।
मैं देख्यो उहि शीशमनि केशनि लियो छिपाय ॥

पिहितालंकारः ।

पिहित छिपी पर-बात को जानि दिखावै भाय।
प्रातहि आये पीय को हँसि दाबत तिय पाय ॥

व्याजोक्त्यलंकारः ।

व्याजोक्ती कछु और बिधि कहैं दुरै आकार ।
सखि शुक काटे कर्म ए दंतनि जानि अनार॥

गूढोक्त्यलंकार।

गूढोकति मिसि और कैं कीजैं पर उपदेश ।
कालिह सखी हौं जाउंगी पूजन देव महेश ॥

विवृतोक्त्यलंकार।

श्लेष छप्यो परकट किये विवृतोक्ती है ऐन ।
पूजन देव महेश को कहा सिखावत सैन ॥

युक्त्यलंकार ।

यहै युक्ति कीन्हें क्रिया मर्म छिपायो जाय ।
पीय चलत आंशू चले पोंछत नैन जँभाय॥१८२॥

लोकोक्त्यलंकार ।

लोकोक्तीं कछु वचन जो लीने लोकप्रवाद ।
नैन मूंदि कछु मास लों सहियें विरह-विषाद ॥

छेकोक्त्यलंकार ।

लोकोक्तिहिं कछु अर्थ सो छेकोक्ती जिय मान ।
जो गायन कों फेरहैं ताहि धनंजय जान॥१८४॥

वक्रोक्त्यलंकार ।

वक्रोक्ती कछु श्लेष सों अर्थ फेर जो होय ।
रसिक अपूरब हो पिया बुरो कहत नहि कोय ॥

स्वभावोक्त्यलंकार ।

स्वभावोक्ति वह जान ले बर्नन जाति सुभाय ।
हँसि २ देखति फिर झुकति मुह मोरति इतराय॥

भाविकालंकार ;

भाविक भूत भविष्य जो परतछ होय बताय ।
वृन्दावन मे आज वह लीला देखहु जाय ॥

उदात्तालंकार ।

उपलच्छन दे शोधिये अधिकाई सु उदात्त ।
तुम जाकी बसि होत हो सुनत तनक सी बात ॥

अत्युक्त्यलंकार ।

अलंकार अत्युक्ति वह बर्नत अतिशय रूप ।
याचक तेरे दान ते भये कल्पतरु भूप ॥१८८॥

निरुक्तिकालंकार ।

सो निरुक्ति जब जोग ते अर्थकल्पना आनि ।
ऊधो कुबजा बस भये निर्गुन वहै निदानि ॥

प्रतिषेधालंकार ।

सो प्रतिषेध प्रसिद्ध जो अर्थ निषेध्यो जाय ।
मोहन-कर मुरली नहीं है कछु बड़ी बलाय ॥

विध्यलंकार ।

अलंकार बिधि सिद्ध जो अर्थ साधिये फेर ।
कोकिल है कोकिल तवै ऋतु मे करिहै टेर ॥

हेत्वलंकार द्विविधः ।

हेतु अलंकृत होय जब कारन कारज संग ।
कारन कारज ये जबै बसत एकही अंग ॥१८९॥

उदित भयो शशि मानिनी मान मिटावन मानि।
मेरे रिद्ध समृद्धि यह तेरी कृपा बखानि ॥

छेकानुप्रासालंकार।

आवृति वर्न अनेक की दोय दोय जब होय।
है छेकानुप्रास सु संमता त्रिनहु सोय ॥१६५॥
अंजन लाग्यो है अधर प्यारे नैनन पीक।
मुकुतमाल उपटी प्रगट कठिन हिये पर ठीक॥

लाटानुप्रासालंकार।

सो लाटानुप्रास जब पद की आवृति होय।
शब्द अर्थ के भेद सो भेद बिनाहु सोय ॥१६७॥
पीय निकट जाके नहीं घाम चांदनी ताहि ।
पीय निकट जाके सखी घाम चांदनी ताहि ॥

यमकानुप्रासालंकार।

यमक शब्द को फिर श्रवन अर्थ दूसरो जानि।
शीतलचन्दन चन्दनहि अधिक अग्नि ते मानि॥

वृत्यनुप्रासालंकार।

प्रतिअच्छर आवृत्ति कहु वृत्ति तीन बिधि मान।
मधुर बरन जामे सबै उपनागरिका जान ॥

दूजैं परुषा कहत सब जामे बहुत समास ।
बिन समासहू मधुरता कहै कोमलोल्लास ॥
अति भारी कारी घटा प्यारी बारी वेश ।
पिय परदेश अँदेश यह आवत नाहिँ सँदेस ॥
कोकिल चातक भृङ्ग कुल कीकी कठिन चकोर।
सोर सुन्यो धरक्यो हियो कामकटक अतिजोर॥
घन बरषत दामिनि लसै दसदिसि नीर-तरंग।
दंपति-हीय हुलास तें अति सरसात अनंग ॥

ग्रन्थप्रयोजनम् ।

अलंकार सब अर्थ के कहे एक सौ आठ ।
किये प्रगट भाषा विषैं देखि संस्कृत पाठ ॥
शब्दालंकृत बहुत है अच्छर के संयोग ।
अनुप्रास षट विध कहे जो हैं भाषा जोग ॥
ताही सब के हेतु यह कीनो ग्रन्थ नवीन ।
जो पण्डित भाषानिपुन कविता विषै प्रवीन॥

लक्षण तिय अरु पुरुष के हाव भाव रसधाम ।
अलङ्कार संयोग ते भाषाभूषण नाम ॥
भाषाभूषण ग्रन्थ को जो देखि चित लाय ।
बिबिध अर्थ साहित्य रस समुझै सबै सुभाय ॥

इति श्रीमन्मरुस्थलाधीश श्रीमन्महाराज जसवन्तसिंहराठौरकृतं भाषाभूषणं समाप्तम् ॥

॥ इति ॥